जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

मूल्य ₹ 60

हंस

जनवरी 2024

नववर्ष की शुभकामनाएं

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
संपादन सहयोग
शोभा अक्षर
माने मकर्तच्यान(अवैतनिक)
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
•
रेखाचित्र
रोहित प्रसाद, अशोक अंजुम

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट : www.hanshindimagazine.in

मूल्य : 60 रुपए प्रति
वार्षिक : 700 रुपए (व्यक्तिगत)
रजिस्टर्ड : 1100 रुपए
संस्था/पुस्तकालय : 900 रुपए (संस्थागत)
रजिस्टर्ड : 1300 रुपए
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

जनवरी, 2024

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-447 वर्ष : 38 अंक : 6 जनवरी 2024

आवरण : दिनेश खन्ना

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

इस अंक में

संपादकीय
4. मेरी तेरी उसकी बात : राजेन्द्र यादव (हंस, जनवरी 1992)

अपना मोर्चा
10. पत्र

न हन्यते
13. पुरुषों को राह दिखाता था मीना राय का नारीवाद : चंद्रभूषण

मुबारक पहला कदम
50. गंध तलाशते दरवेश का बयान : फहीम अहमद

मुड़-मुड़ के देख
16. सिकुड़ता हुआ बाप : राजेन्द्र भट्ट (हंस, अक्तूबर 1986)

कहानियां
20. चारागाह : जितेन ठाकुर
24. देश के लिए : प्रियदर्शन
30. आत्मभक्षण : टेकचन्द
42. आधा अधूरा : उज़्मा कलाम
74. बाढ़ में : तकषी शिवशंकर पिल्लै (मलयालम कहानी) (अनुवाद : संतोष अलेक्स)

कविता
72. सत्येन्द्र कुमार, आराधना झा श्रीवास्तव
73. शैलेंद्र शांत

लघुकथा
12. अशोक 'आनन'

ग़ज़ल
83. अशोक अंजुम

परख
77. अपने साथ जीवन को समझने की प्रेरणा : महेश दर्पण
81. गांधी की मीरा : गोपाल प्रधान
84. जीवट बचपन की उड़ान : वंदना
85. स्त्री विमर्श का नया अर्थवृत्त रचती कहानियां : ऋत्विक भारतीय

सृजन परिक्रमा
88. साहित्यनामा : वर्ष 2023 : साधना अग्रवाल

रेतघड़ी
92-98

मेरी तेरी उसकी बात

राजेन्द्र यादव

भाइयो, नए वर्ष पर मेरे मन में एक अत्यंत ही शुभ विचार का उदय हुआ है. गुस्से या व्यंग्य से नहीं, ईमानदार चिंता के साथ मैं उसमें आपकी हिस्सेदारी आमंत्रित कर रहा हूं ताकि बाकायदा विचार-विमर्श के बाद हम कुछ नतीजों पर पहुंच सकें. कल जब आत्मीय बंधु विष्णुकांत शास्त्री ने फोन पर यह सूचना दी कि अगर आप लोगों का हिंदू-धर्म के प्रति यही रवैया रहा तो बहुत जल्दी ही हम केंद्र में आ जाएंगे. इसके लिए हमारी ओर से छद्म-धर्मनिरपेक्षियों को धन्यवाद...जो हिंदुओं की हर बात को कोसना और मुसलमानों की हर कट्टरता, मूर्खता और संकीर्णता के समर्थन को ही 'प्रगतिशीलता' मानते हैं. मुझे भी लगा कि शास्त्री जी का सोचना भी ठीक ही है. कल भारतीय जनता पार्टी केंद्र में आएगी तो देश में 'हिंदू-पद-पादशाही' यानी हिंदू-राज्य की स्थापना भी होगी ही. 'अवाजो' नाम के ब्रह्मा-विष्णु-महेश पूरे मेकअप में तैयार, विंग में बैठे-बैठे ऊब रहे होंगे कि कब घंटी बजे और कब मंच पर आकर सिंहासन संभालें. सोमनाथ से लेकर अयोध्या की एक रथयात्रा ने उन्हें लखनऊ की गद्दी दिलाई तो दूसरी कन्याकुमारी से कश्मीर की 'एकता यात्रा' निश्चय ही उन्हें दिल्ली की गद्दी पर ला बैठाएगी...उदित होने वाले जिस विचार की मैं बात कह रहा था वह यही था कि भारत में हिंदू-राज्य नहीं होगा तो क्या ग्वाटेमाला या आयरलैंड में होगा? अगर मुसलमान अपनी शरीयत के हिसाब से निजामे-मुस्तफा बना सकते हैं, ईसाई, यहूदी, सिख–सभी अपने धर्म राज्य बना सकते हैं तो हम भी क्यों नहीं बना सकते? जरूर बना सकते हैं, बनाना चाहिए.

अब मेरी दिक्कत यहीं से शुरू होती है...क्योंकि धर्मराज्य बनाने के लिए जरूरी होगा एक ईश्वरीय-ग्रंथ, एक ईश्वर, एक संविधान और एक इतिहास. उसी के आधार पर तो राष्ट्रीयता की परिभाषा दी जा सकेगी (मूर्ख लोग ऐसे आग्रह को ही 'इस्लामीकरण' का नाम देते हैं मगर थियोक्रेटिक स्टेट की कुछ अपनी शर्तें तो होती ही हैं.) तो सबसे पहले हमें इस 'झूठ और ढोंग' के पुलिंदे संविधान का तर्पण करना होगा–वैसे भी अंबेडकर जैसे महार-चमारों का बनाया संविधान हम क्यों स्वीकार करेंगे? ले-देकर मनुस्मृति ही अपने पास बचती है. यानी मनु-याज्ञवल्क्य का बनाया संविधान ही कानून होगा–वही तो हदीस कुरान जैसा पूज्य, पुरातन और प्रामाणिक है. अगर हमने सबका घाल-मेल करके 'रामचरितमानस' या वेद-निर्भर 'सत्यार्थ प्रकाश' जैसा नया कुछ बना लिया तो फिर कोई सिरफिरा टंटा खड़ा कर देगा. यानी मनुस्मृति का वर्णाश्रम धर्म 'समाज-व्यवस्था' बनाएगा–जहां लोगों की हैसियतें, पद या प्रतिष्ठा उनके जन्म या पूर्वजन्म में किए गए कृत्यों और सुकृत्यों से तय होंगी. इधर शूद्र भी दबंग और गुस्ताख हो गए हैं. सालों ने वेद-पुराण पढ़ लिए हैं न, इसलिए रांगे और सीसे की खपत बहुत बढ़ जाएगी, उन्हें गरम करने के लिए भट्ठियां भी बनवानी पड़ेंगी. अगर मुसलमान शरीयत का उल्लंघन करनेवालों को संगसार कर सकते हैं, उनके हाथ-पांव-सिर काट सकते हैं या चौराहे पर कोड़ों की सजा दे सकते हैं तो हम भी अपने 'अपराधियों' को सूली पर चढ़ा सकते हैं, उनके मुंह में विष्ठा और कानों में सीसा भर सकते हैं. स्त्रियों को भी उनकी

जगह बतानी होगी...जरा पढ़-लिख क्या गई हैं, बराबरी की बातें करने लगी हैं. अपने आपको हममें से ही एक समझने लगी हैं, हमारी ही भाषा बोलने लगी हैं, यह भूल गई हैं कि एक झटका लगेगा तो अपनी जगह पता चल जाएगी...मुंह लगाई डोमनी.

शब्दों को चबाने या गोलमोल बात करने की जरूरत नहीं है, इसलिए साफ कह दिया जाना चाहिए कि इस राज्य में नारियों, शूद्रों, विधर्मियों और विजातियों को हमारी शर्तों पर ही रहना होगा. तुष्टीकरण की किसी नीति को बढ़ावा नहीं दिया जाएगा. विवाह, विरासत, जमीन पर मिल्कियत, पूजा या अन्य सामाजिक आचार-व्यवहार के लिए सब जगह एक ही कानून होगा और चूंकि हम बहुमत में हैं इसलिए वह हमारा ही होगा. प्रजातंत्र के इस युग में सारी दुनिया में बहुसंख्यक ही मुख्यधारा होते हैं और वही राष्ट्रीयता तय करते हैं. जो हमारी राष्ट्रीय-भावना को स्वीकार करते हुए इसे मानें, वे सुख-चैन से रहें, जिन्हें यह रास न आए–वे जहां मन हो चले जाएं. उनके लिए सारी दुनिया खुली है. मजाक समझ रखा है इन्होंने राष्ट्र और संविधान को–जब मन हुआ तो इसके नाम पर सुविधाएं भकोस लीं और जब मन हुआ तो मनमानी करने लगे या अपनी अलग अस्मिता का नारा बुलंद कर दिया. दोनों बातें कैसे चलेंगी? मुसलमानों की तरह शूद्र और दलित भी हमारे लिए बहुत बड़ा सिरदर्द बनने जा रहे हैं–इनमें भी वैसी ही गंदगी, अशिक्षा, अपराध और अधिक बच्चे पैदा करने का बोलबाला है. इधर तो इनमें धीरे-धीरे शिक्षा, पैसा और एका या संगठन की बीमारियां भी काफी फैल गई हैं. परिणामतः महत्वाकांक्षा और होड़ महामारी की तरह इन्हें अपनी चपेट में लिए चला आ रहा है. लेकिन एक अच्छी बात है : न इनके धार्मिक विश्वास, सामाजिक, रीति-रिवाज और पूजा-पद्धतियां अलग हैं, न मुसलमानों जैसी कट्टरता है, इसलिए पहले तो इन्हें समझा-बुझाकर, लोक-परलोक के डर दिखाकर, देवी-देवताओं का वास्ता देकर, साम-दाम-दंड-भेद के साथ रखने की कोशिश की जाएगी, कानून बनाए जाएंगे कि धर्म-परिवर्तन करके शत्रुओं में न जा मिलें और उनकी संख्या न बढ़ा दें–या फिर 'दलितस्तान' जैसी कोई जगह बनाकर अलग कर दिया जाएगा. इसमें परेशानियां जरूर हैं क्योंकि मुसलमानों की तरह ये लोग भी तो बस्ती-बस्ती या शहर-गांवों में फैले हैं, हमारी साफ-सफाइयां, मेहनत-मजूरी करते हैं. इनके जाने से हमारी जिंदगी का पहिया एक दिन में रुक जाएगा. इसलिए यहां कोई चाणक्य-बुद्धि लगानी पड़ेगी, इन्हें बहुत सिर पर भी न बैठाया जाए और अपना भी काम चले...खैर, ये सब बातें बाद की हैं...उस समय कह देंगे कि शास्त्रों के प्रमाण हैं–जातियां, जन्म इत्यादि से नहीं–श्रम-विभाजन से बनी हैं, वे सच्चे अर्थों में वर्ण नहीं, वर्ग हैं और अगर आपने या हमने एक विशेष दिशा में दक्षता हासिल की है तो उस व्यवस्था को तोड़ना देश का नाश करना है, राष्ट्रद्रोह है. हां, साथ खाने या साथ पूजा करने की भावना या रिश्ता करने का आग्रह म्लेच्छ भावना है, ऐसे आग्रह से धर्म का नाश होता है, वह किसी कीमत पर नहीं करने दिया जाएगा.

अब चूंकि हमारा राज्य भी एक धर्म-राज्य होगा इसके लिए तैंतीस करोड़ का मोह छोड़कर एक ऐसे देवता की प्रतिष्ठापना करनी होगी जो आ-सेतु हिमालय एक हो, क्योंकि इसके बिना राष्ट्र की एकता और अखंडता को खतरा हो सकता है. इस मामले में पहले जैसी सुविधा अब नहीं है. पहले छोटे-छोटे राज्य होते थे और हर राज्य का आराध्य देवता अलग होता था लेकिन अब तो मामला अखंड-भारत का है. सोचना यह है कि कौन हो सकता है ऐसा देवता? उनके पास तो एक खुदा है, उसकी वाणी को धरती पर लाने वाले मुहम्मद साहब हैं, शाखाएं पचास हों, लेकिन असली मामले में मतभेद नहीं है. फिर हमारे ऐसे 'देवता' क्या राम होंगे? कायदे की बात तो यह है कि राष्ट्र-देवता तो राम को ही होना चाहिए क्योंकि इन्हीं के कंधों पर सवार होकर तो हमने आधे भारत में अपना शासन स्थापित किया और अगर राम चाहेगा तो केंद्र में भी आ ही जाएंगे, मगर कौन-से राम? गुरु वशिष्ठ के इशारों पर चलते, सिंहासन पर बैठे और गो-ब्राह्मण की रक्षा करते, अलेक्जेंडर और बाबर की तरह खूंखार दिग्विजयी राम या कोल-भीलों के साथ उठते-बैठते, ब्राह्मण दंभ में सबको कुचलने वाले रावणों का वध करते राम? अच्छा, राष्ट्र देवता राम हुए तो फिर कृष्ण क्या होंगे? सच पूछा जाए तो राम गंगा-यमुना के दोआबे के देवता हैं–समझो कानपुर से पटना तक, बाकी बंगाल, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश या महाराष्ट्र तक अलग-अलग छाए तो कृष्ण ही हैं. (महा) भारत नाम ही उन्हीं का दिया हुआ है. वैसे राम बारह कलाओं के अंशावतार हैं तो कृष्ण सोलह कलाओं के पूर्णावतार...हिंदू-धर्म के सर्वोत्कृष्ट राष्ट्रीय महाग्रंथ गीता के प्रणेता...फिर कृष्ण के आस-पास जैसा दार्शनिक- आध्यात्मिक चिंतन-मनन है, साहित्य, संगीत, नृत्य, भक्ति सब जुड़े हैं, राम तो वहां कहीं ठहरते ही नहीं हैं (मुरली मनोहर, लालकृष्ण या अटल बिहारी–तीनों ही तो कृष्ण के नाम हैं) राम के नाम पर आप सिर्फ कीर्तन कर सकते हैं या कबीर की तरह कह सकते हैं कि मेरे राम दशरथ-सुत नहीं हैं, मगर सब मिलाकर वे सारी दार्शनिक गहराइयां और ऊंचाइयां कहां से लाएंगे जिनसे सारी दुनिया पर रौब-ग़ालिब किया जा सके?...ठीक है, कृष्ण मर्यादा पुरुषोत्तम नहीं, मर्यादा-भंजक हैं–मगर अखिल भारतीय स्तर पर तो स्वीकृत वही हैं.